(1)

BA-M/
मैथिली प्रतिष्ठा/
पारिचायिका/
Lecture - IV

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि सहायक प्राध्यापक) ज०
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

<u>रमानाथ झाक आलोचना</u> :- आलोचनामे हिनक अवदान अविस्मरणीय अछि। मैथिली साहित्य परिषद तथा मैथिली लेखक - सम्मेलन आदि अधिवेशनमे आलोचना - विभागक अध्यक्षक पदसँ देल गेल हिनक व्याख्यान (विविध प्रबन्ध) मे संकलित आलोचना शास्त्रक प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत अछि। कविता - संग्रहमे कवि लोकनिक प्रसंग जे हिनक अभिमत अछि से समालोचनाक कसौटी पर कसल, सुस्पष्ट आ दिशा - निर्देशक अछि। हिनक निबन्ध ओ टिप्पणीक विषयक गम्भीर पकड़ तथा ओकरा प्रौढ़ भाषामे अभिव्यक्त करबाक सुन्दर दृष्टान्तक रूपमे लेल जा सकैछ।

अनुसन्धानक दृष्टि सँ हिनकर विलक्षण देन छनि। पंजीक आधार पर कतेको विवादास्पद विषयकेँ, यथा प्राचीन कवि लोकनिक स्थान आ

Scanned by TapScanner

समयकेँ किवा कोनो स्थान धरनाकेँ, ई प्रमाण पुरस्सर सोझरौलनि। पंजिकेँ ई ज्ञाता छलाह, तखन नहि ओकर वैज्ञानिक अध्ययन एवं ओकर समुचित महत्वकेँ नीक जकाँ बुझनिहार सेहो छलाह। चन्दाझाक मिथिलाभाषा रामायणक विभिन्न पुस्तकक पाठ-भेदकेँ इंगित करैत ओकर शुद्ध पाठकेँ कवीश्वरक पाण्डुलिपि मिलान कऽ, सुसम्पादित रूपमे राजप्रेस [illegible] नीक ढंग प्रकाशित करैत छलाह।

प्रो॰ हरिमोहन झा उचिते हिनका लेल कहने छथि। हिनक समस्त विशेषताकेँ प्रो॰ झाक एहि वाक्यमे गुम्फित कऽ देलनि अछि — मैथिलीक प्रति अतीव आस्था ओ निष्ठाक संग, मैथिलीक प्राचीन कीर्ति ओ मौलिक संरक्षणक उद्देश्य - उत्साहमे उत्तम, शोध, गवेषणा ओ समीक्षाक क्षेत्रमे लेखनी जकाँ नेतृत्व करैत साहित्यक निर्माण, संकलन, सम्पादन ओ दिशा-निर्देशन द्वारा मैथिलीक एहन - अमूल्य सेवा कएने छथि जे इतिहासमे चिरस्मरणीय रहत।

Sanjit Kumar Ram